दिनांक :- 31-03-2020

कॉलेज का नाम - मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग - B.A Part (II) प्रतिष्ठा द्वितीय खण्ड इतिहास

सलतानत काल के स्त्रोतों में भवन, आस्मार्क, सिक्के, आदि तात्कालिक समय की जानकारी देते हैं। जैसे, कुत्बुद्दिन, ऐबक के सिक्के पर एक तरफ कलमा, और दूसरी तरफ बादशाह का चित्र गुफत काल में प्राप्त सिक्कों पर तात्कालिन समय की जानकारी ठीक उसी प्रकार हर्ष चोल प्रतिहार पाल राष्ट्रकूट के सिक्के, भवन निर्माण स्थापत्य कला, मूर्ति कला, चित्र कला, आदि का विस्तृत जानकारी प्राप्त कराते है। ठीक इसी प्रकार इब्ने बतूता का रहला एसामी की फतुहुस सलातीन और अमीर खुशरो की मिफ्ताह अलफतुह खजाइनुल फुतुह अमीर हसन शिजिज की फाइद अल फुआद, आदि प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

(i) पुरातात्विक स्त्रोत

पुरातात्विक स्त्रोत :- (Archaeological Sources), प्राचीन भारत को जानने का सर्वाधिक सहाय एंव विश्वसनीय साधन माना जाता है। इसके अन्तर्गत मुख्यतः, अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन मूर्तियाँ चित्रकला आदि आते है। ऐसी वस्तुओ का अध्ययन करने वाला व्यक्ति पुरातत्वविद् (Archaeologist) कहलाता है।

अभिलेख पत्थरो, स्तम्भो, धातु की पट्टियो या मृदभाण्डो पर उत्कीर्ण प्राचीन विवरण को अभिलेख कहते है। अभिलेखो (Inscriptions) के अध्ययन को पुरालेख शास्त्र (Epigraphy) और इनकी तथा दूसरे पुराने दस्तावेजो की प्राचीन लिपि के अध्ययन को पुरालिपि शास्त्र (Palaeography) कहा जाता है।

Scanned with CamScanner